Indian J. Soc. & Pol. 09 (02) : 91-94: 2022
First Published Online 31 JULY 2022

ISSN : 2348-0084 (PRINT)
ISSN: 2455-2127(ONLINE)

सांप्रदायिक दंगों के वक्त मीडिया : एक विवेचनात्मक अध्ययन

ममता शर्मा[1] दीपक राणा[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मेरठ कॉलिज मेरठ, उ0प्र0,भारत
[2]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मेरठ कॉलिज मेरठ, उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

भारत जैसे पंथ–निरपेक्ष देश में जहाँ सभी धर्मो को समान रुप से मान्यता मिली हुयी है वहीं आज भी धर्म के आधार पर सांप्रदायिक उन्माद की घटनाऐ अक्सर देखने को सामने आती रहती है। आज सांप्रदायिक घटनाओं ने देश को परस्पर विभिन्न धार्मिक समुदायों में बांटने एवं उनके मध्य घृणा, द्वेष, वैमन्सय को बढ़ाने का कार्य किया है। सांप्रदायिकता आज ऐसे रोग के रुप में हमारे सम्मुख है जिसने मानव को नैतिक–मानसिक एवं धार्मिक रुप से पंगु बना दिया है। वहीं बात करें शोध पत्र के दूसरे पक्ष की तो वो मीडिया है। मीडिया जिसकी सर्वव्यापी उपस्थिति आज किसी से छिपी नहीं है। यह आज सामाजिक परिवर्तन का मुख्य नियामक बनता जा रहा है, लेकिन आज मीडिया को सांप्रदायिक दंगों के साथ संबद्ध करके भी देखा जा रहा है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में हम सांप्रदायिक हिंसाओं के वक्त मीडिया के विभिन्न माध्यमों जैसे– प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रानिक मीडिया एवं वर्तमान समय के सर्वाधिक लोकप्रिय मीडिया माध्यम सोशल मीडिया की भूमिका को जानने एवं समझने का प्रयास करेगें की वो तात्कालीन स्थिति में किस प्रकार अपने दायित्व का निर्वाह करते है।

KEYWORDS : *सांप्रदायिकता, मीडिया, दंगा,*

ब्रिटिश शासन की विस्तारवादी और औपनिवेशिक नीति की यह देन आज भारतीय समाज में रच–बस गयी है। आज यह हमारी राष्ट्रीय एकता एवं बंधुत्व की उस भावना को खण्डित कर रही है जो कभी भारतीय संस्कृति की पहचान हुआ करती थी। आज स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशक बीतने के उपरांत भी हम धर्म निरपेक्षता पर आधारित आदर्श राष्ट्र की अवधारणा का पीछा कर रहे हैं। भारत में सांप्रदायिक दंगों के कारणों की बात की जाये तो इसके पीछे किसी एक कारण को इसके लिए आरोपी नहीं ठहराया जा सकता है। आज देश में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति हेतू भोली–भाली जनता को आपस में लड़ाया जा रहा है। सांप्रदायिकता की अवधारणा मुख्यतः वास्तविकता से कोसो दूर काल्पनिक चेतना और गलत समझ पर आधारित होती है। अधिकांश सांप्रदायिक घटनायें आज चीजों की गलत व्याख्या एवं भ्रामक सूचनाओं के समाज में प्रचारित होने के कारण हो रही है।

शोध पत्र के दूसरे विषय की बात की जाये तो वो मीडिया है। यह सर्व विदित है कि मीडिया आज आधुनिक समाज के विकास में प्रमुख नियामक के रुप मे ंकार्य कर रहा है। मीडिया विचार एवं अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। यह हमारे चारों ओर के परिवेश के दर्पण के रुप में आज कार्य कर रहा है। समाज में जो घटित होता है वह मीडिया रुपी दर्पण पर परिलक्षित हो लोगों तक पहुँचता है। मीडिया सूचना एवं जानकारियों के माध्यम से व्यक्ति को समाज से जोड़ने का कार्य कर रहा है। आज मीडिया का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है यह अपनी पुरानी परिपाटी से पूर्णतः मुक्त हो चुका है। आज यह सूचना एवं संचार के साथ–साथ सामजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्रों को भी प्रभावित कर रहा है। मीडिया के माध्यम वो चाहे प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रानिक मीडिया या फिर आधुनिक समय का सर्वाधिक लोकप्रिय मीडिया माध्यम सोशल मीडिया हो, इन सभी ने अपनी सूचना एवं संप्रेक्षण क्षमता के द्वारा संपूर्ण विश्व को एक ग्लोबल विलेज के रुप में स्थापित कर दिया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिना संचार साधनों के किसी भी मानवीय समाज के विकास की कल्पना करना बेईमानी होगा।

परम्परागत मीडिया जैसे–रेडियो, टी0वी0, अखबार के अलावा आज मीडिया के आधुनिक स्वरुप जिसे सोशल मीडिया के नाम से जाना जाता है, उसने आज सूचना संचार के मायने ही बदल दिये है। आज पलक झपकते ही इसके माध्यम से सूचना एवं जानकारियाँ सम्पूर्ण समाज में व्याप्त हो जाती है। आज लगभग आधी दुनिया संचार के इस आधुनिक माध्यम का उपयोग कर रही है। आज सोशल मीडिया के परिणामस्वरुप हर व्यक्ति लेखक, संपादक, चिंतक एवं उपदेशक बन गया है निश्चित रुप से आज मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। लेकिन जिस प्रकार से हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही मीडिया के भी दो पहलू हैं, एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक। मीडिया जहाँ एक ओर सामाजिक परिवर्तन एवं उसके विकास के नियामक के रुप में हमारे सम्मुख है वहीं दूसरी ओर आज इसे समाज में प्रेम, एकता, और सौहार्द को बिगाड़ने का कारक भी समझा जाता है। आज मीडिया आर्थिक स्वार्थ के वशीभूत हो अपने नैतिक दायित्व से कहीं न कहीं पृथक होता नजर आ रहा है। मीडिया आज खबरों को इस तरह से पेश करता है, जो साधारण मानवीय मस्तिष्क को भ्रमित कर उस पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है परिणामस्वरुप लोगों के मध्य परस्पर वैमन्यता का भाव उत्पन्न होता है जिससे समाज में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिलता है। उपरोक्त शोध पत्र में सांप्रदायिक दंगों के वक्त मीडिया के विभिन्न

1: Corresponding Author

माध्यम किस प्रकार की भूमिका निर्वाह करते है, उसका विश्लेषाणत्मक ढंग से अध्ययन किया गया है।

सांप्रदायिक दंगों के वक्त प्रिंट मीडिया

प्रिंट मीडिया में हम समाचार पत्र, पत्रिकाएँ एवं पुस्तकों को सम्मिलित करते हैं। मीडिया संसाधनों के विकास की बात की जाये तो सर्वप्रथम प्रिंट मीडिया का ही विकास हुआ है। भारत में प्रिंट मीडिया की शुरुआत अंग्रेजी शासन की देन रही है। भारत में सर्वप्रथम पहला सामचार पत्र अंग्रेजी भाषा में सन् 1776 में प्रकाशित हुआ। भारतीय भाषा में सर्वप्रथम 1819 में राजा राम मोहन राय द्वारा बंगाली पत्र 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन किया गया। 19वीं सदी के उपरांत भारत में पत्रकारिता के विकास में बहुत तेजी आयी जिससे पत्रकारिता जगत में एक नयी क्रांति का सूत्रपात हुआ।

वर्तमान समय में समाचार पत्र, पत्रिकाएँ हमारे जीवन में इस प्रकार प्रवेश कर चुकी है कि बिना इनके दिन की शुरुआत ही नहीं होती है। समाज का हर शिक्षित वर्ग प्रिंट मीडिया के विभिन्न माध्यमों का आदी हो गया है। ये प्रिंट मीडिया ही है जिसने अंग्रेजी शासन की आलोचना कर भारत के लोगों को एकजुट करने का कार्य किया तथा अंग्रेजी शासन से भारत को मुक्ति दिलायी। आज टेक्नॉलजी के दौर मे भी प्रिंट मीडिया अपनी प्रांसगिकता बनाये हुये है।

यदि बात करें प्रिंट मीडिया की साप्रंदायिक दंगों के वक्त भूमिका की तो मीडिया के अन्य माध्यमों जिनमें हमें इलैक्ट्रानिक मीडिया एवं सोशल मीडिया को देखते हैं तो उनकी तुलना में उतनी नकारात्मक नहीं नजर आती है। सांप्रदायिकता के प्रचार–प्रसार में प्रिंट मीडिया की भूमिका सबसे कम रही है। इलैक्ट्रानिक एवं सोशल मीडिया पर सूचना एवं जानकारियाँ त्वरित गति से फैलती है जबकि प्रिंट मीडिया में ऐसा नहीं है। समाचार पत्र, पत्रिकाऐं एक निश्चित समय पर पाठकों तक पहुँचते हैं हॉलांकि ऐसा नहीं कि प्रिंट मीडिया को हम पूर्ण रुप से विशुद्ध कहें। आज प्रिंट मीडिया की नैतिकता पर भी प्रश्न चिन्ह लग रहे है। आज हम देखते है कि दंगों के वक्त अखबारों में खबरों के शीषर्क कुछ और होते है तथा पूरी खबर पढ़ने पर कुछ और ही देखने को मिलता है। कई बार दंगों के वक्त समाचार पत्रों द्वारा जिस प्रकार आंकड़ों को पेश किया जाता है वो भी लोगों के मनों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है बात करें साहित्य की तो आज उसमें भी कुछ लेखकों के द्वारा अपनी पुस्तकों में सांप्रदायिक विचारों को जगह दी जा रही है जो परस्पर लोगों को आपस में बांटने का कार्य कर रही है। सांप्रदायिकता वास्तव में एक छमन् चेतना है जो व्यक्ति की गलत समझ का परिणाम है, व्यक्ति तथ्यों और घटनाओं को अपनी सझम से देखने का प्रयास करता है और यहीं से चीछे खराब होती चली जाती है।

भारत में स्थानीय प्रेस संस्थानों द्वारा अभी भी हिन्दु मुस्लिम सांप्रदायिकता के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है, हॉलांकि अंग्रेजी के अखबारों में क्षेत्रीय भाषायी प्रेस की तुलना में सांप्रदायिकताा के प्रति दृष्टिकोण कहीं अधिक शांत दिखाई पड़ता है। पत्रकारिता में आमतौर पर सांप्रदायिक दंगों के वक्त देखने को आता है कि वे अविश्वसनीय स्त्रोतों से जानकारियों को एकत्र करती हैं एवं मिथको पर आधारित सूचनाओं का प्रचार–प्रसार करती है जोकि समाज में सांप्रदायिकता को बढ़ावा देती है। कभी–कभी यह भी देखने में आता है कि खबरों को मिर्च–मसाला पूर्ण बनाने के प्रयास में भाषायी आधार पर प्रिंट मीडिया अपनी सीमाओं का उल्लघन्न कर जाता है जो समाज में लोगों के मनों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। भाषा की ताकत को तोप की ताकत से कहीं अधिक कहा गया है चूंकि इसमें समाज को परिवर्तित करने की शक्ति निहित होती है। अतः आज आवश्यकता है इसकी महत्ता को समझने की तभी हमें इसके सार्थक परिणाम देखने को मिलेंगे।

सांप्रदायिक दंगों के वक्त इलैक्ट्रॉनिक मीडिया

वर्तमान समय में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव समाज पर इतना अत्याधिक हो गया है कि इसके बगैर मानव जीवन की कल्पना करना भी बेइमानी होगा। रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा ये सभी इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के घटक है। आज भारत के लगभग हर घर में चाहे वो शहरी हो या ग्रामीण इलैक्ट्रानिक मीडिया पहुँच गया है। आज सैकड़ों की संख्या में टी0वी0 चैनलों का प्रसारण भारत में हो रहा है। टी0वी0 चैनलों का प्रभाव प्रत्यक्ष रुप से आज समाज पर देखने को मिल रहा है। मीडिया आज जिसे चाहे फर्श से अर्श पर और अर्श से फर्श पर पहुँचा सकता है। लोगों के आचार–विचार, रहन–सहन, रंग–ढंग इन सभी पर टी0वी0 एवं सिनेमा का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है तथा इसमें कोई संदेह नहीं कि इलैक्ट्रानिक मीडिया सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारकों में से एक है।

बात करें सांप्रदायिक दंगों के वक्त इलैक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका की तो यहाँ पर लोगों के मतों में विरोधाभास की स्थिति देखने को मिलती है। कुछ लोग मानते है कि टी0वी0 चैनल सांप्रदायिक दंगो के वक्त हिंसा को बढ़ाने का कार्य करते है तो वहीं कुछ लोगों का मत है कि इलैक्ट्रॉनिक मीडिया समाज में सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देता है। आज इस भौतिक वादी संसार में इलैक्ट्रानिक मीडिया भी व्यवसायिकता के प्रभाव से अपने को अछुता नहीं रख सका है तथा व्यवसायिक हाथों में जाने के कारण अपने दायित्वों के प्रति इलैक्ट्रानिक मीडिया की लाचारी स्पष्ट देखने को मिलती है। बाजार वाद और गलाकाट प्रतिस्पर्धा ने व्यवसायिक सफलता के लिए जिन कठोरतम शर्तों का निर्माण किया है उसने इलैक्ट्रानिक मीडिया के स्वभाव को निर्मम बना दिया है।

इलैक्ट्रानिक मीडिया का क्षेत्र आज बहुत व्यापक है इसकी पहुँच आज भारत की लगभग 80 प्रतिशत आबादी पर है। अनेको बार ऐसा देखने को आया है कि सांप्रदायिक हिंसा किसी एक प्रांत में होती है लेकिन इलैक्ट्रानिक मीडिया के परिणाम स्वरुप इसकी जानकारी सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैल जाती है और इससे सांप्रदायिक हिंसा का दायरा भी बढ़ जाता है। गुजरात दंगे हो या फिर बाबरी मस्जिद विध्वंस या फिर 2013 के उत्तर प्रदेश

के मुज्जफरनगर की सांप्रदायिक हिंसा यह कुछ ऐसी घटनायें थी जहाँ हिंसा किसी एक स्थान पर शुरु हुयी लेकिन मीडिया के परिणाम स्वरुप यह एक व्यापक समाज तक फैल गयी परिणाम स्वरुप अत्याधिक जनहानि हुयी।

इलैक्ट्रानिक मीडिया आज समाज में उत्पादन एवं पुनरुत्पादन की भूमिका में है। यह समाज में किसी भी विचारधारा को गतिशीलता प्रदान करने में अहम भूमिका निर्वाह करती है। अक्सर देखने में आया है कि दंगों के वक्त टी0वी0 चैनल प्रत्यक्ष रुप से अनुमान आधारित घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं परिणाम स्वरुप लोगों के मन में गलत विचारधारा को पनपने का अवसर मिलता है। यह कहना आज गलत नहीं होगा कि इलैक्ट्रानिक मीडिया अप्रत्यक्ष रुप से सांप्रदायिकता को बढ़ावा देती है। आज विभिन्न टी0वी0 चैनलों पर बिना किसी सेंसरशिप के विभिन्न सांप्रदायिक संघठनों के प्रवक्ताओं के विचारों और तर्कों को प्रसारित किया जाता है। जिसमें कभी–कभी ऐसी भाषा शैली का प्रयोग होता है जो सांप्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने का कार्य करती है। ऐसा नहीं है कि इलैक्ट्रानिक मीडिया हमेशा दंगों को बढाने का ही कार्य करती है, यह समाज में सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना में भी बल देती है। चूंकि मीडिया की पहुँच आज व्यापक जन–समूह तक है तो इस पर उदारवादी विचारधाराओं के प्रचारकों द्वारा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने वाले संदेश भी प्रेषित किये जाते है। निश्चित रुप से मीडिया आज एक दो–धारी तलवार के रुप में हमारे सम्मुख है। इलैक्ट्रानिक मीडिया का ये नैतिक दायित्व बनता है कि वो सांप्रदायिक दंगों के वक्त अनुमान आधारित तथ्यों को लोगों के सम्मुख प्रस्तुत न करे चुंकि इस प्रकार की सांप्रदायिक प्रस्तुतियाँ समाज में गंभीर परिस्थितियों को जन्म देती है।

सांप्रदायिक दंगों के वक्त सोशल मीडिया

वर्तमान युग असीम संभावनाओं का युग है। आज वो हर चीज कर पाना संभव है जो गुजरे जमाने में कल्पनीय था। सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नये आविष्कारो ने सूचना और संचार के मायने ही बदल दिये है। सोशल मीडिया इन्हीं आविष्कारो की उपज है। सोशल मीडिया वर्तमान समय का एक महत्वपूर्ण सच है जिसका जुनून आज लोगों के सर चढ़ कर बोल रहा है। अभिव्यक्ति की आजादी को इसने एक नये मुकाम तक पहुँचाया है। यह समाज के मध्य एक ऐसा माध्यम बनकर उभरा है, जहाँ लोग पलक झपकते ही सूचना जानकारियाँ एवं अपने विचारों का आदान प्रदान करते है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, वाट्सऐप आज मानव जीवन की अहम आवश्यकताओं में से एक बन चुके हैं। आज का मानव प्रातः उठते ही सर्वप्रथम अपने मोबाइल फोन को तलाशता है। ये सोशल मीडिया ही है जिसके परिणाम स्वरुप आज जनता की आँख और कान हर जगह रहने लगी है।

वर्तमान समय में सूचना–संचार के इस सर्वशक्तिशाली माध्यम की शुचिता पर प्रश्न चिन्ह लगने शुरु हो गये है। आज सोशल मीडिया समाज के लिए वरदान के साथ–साथ एक अभिशाप के रुप में भी समाने आ रहा है। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार नब्बे के दशक में अल्ट्रासोनोग्राफी मशीन का देश में बहुत तीव्र गति से प्रचलन हुआ हालांकि इसका उद्देश्य नेक काम के लिए होना था किंतु इसके द्वारा भ्रूण परिक्षण में तेजी आयी और कुछ लोगों की अनैतिक कारगुजारियों ने इसे एक ''किलिंग मशीन के रुप में परिवर्तित कर दिया परिणामस्वरुप देश में लिंग अनुपात का अंतर बढ़ता चला गया ठीक उसी प्रकार आज सोशल मीडिया की स्थिति है। सांप्रदायिक दंगों के वक्त सोशल मीडिया माध्यम सही मायने में एक 'किलिंग मशीन' के रुप में हमारे सामने हैं। फेसबुक, टवीट्र, वाट्सऐप यूट्यूब का प्रयोग आज दंगों के वक्त समाज में नकारात्मकता फैलाने के लिए बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। आज सोशल मीडिया के माध्यम से सांप्रदायिक दंगों के ऑडियो एवं वीडियो का प्रसार काफी तेजी से हो रहा है परिणाम स्वरुप हिंसा से संबधित अमानवीय ग्राफिक चित्रण आम जन वर्ग में अन्य समुदायों के प्रति घृणा की भावना को बढ़ा रहा है।

सांप्रदायिक दंगों के वक्त यह देखने में आया है कि सोशल मीडिया माध्यमों द्वारा किसी अन्य जगह पर घटित सांप्रदायिक हिंसा को भी तात्कालिक हिंसा बताकर उसके वीडियो फैलाये जाते हैं परिणाम स्वरुप लोगों की भावनायें भड़कती है और सांप्रदायिकता तेजी से फैलती है। ऐसे असंख्य उदाहरण है जहाँ लोगों ने बिना–सोचे समझे ऐसी पोस्ट सोशल मीडिया पर डाली जो उस दंगे से सबंधित थी ही नहीं। अफवाहों की भरमार और समाज को बांटने वाली गलत जानकारियाँ स्थानीय स्तर पर सांप्रदायिकता को जन्म देती है और जो सोशल मीडिया के माध्यम से आज संपूर्ण देश में फैल जाती है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया के माध्यमों से स्थानीय सांप्रदायिक संघर्ष कुछ ही पलों में राष्ट्रीय मुद्दा बन जाता है और जिसके फलस्वरुप एक छोटी सी घटना एक बड़ा सांप्रदायिक कथानक तैयार कर देती है।

सोशल मीडिया ने आज सांप्रदायिक हिंसा के 'पारंपरिक मॉडल' को बदल दिया है। सूचना की गति एवं प्रसार के कारण किसी एक राज्य में घटित सांप्रदायिक हिंसा कहीं न कहीं अन्य राज्यों को भी प्रभावित करती है। आज ये अक्सर देखने को मिल जाता है कि विभिन्न रानीतिक दल इन हिंसाओं के माध्यम से अपने राजनीतिक लक्ष्यों को भी पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। आज सोशल मीडिया को हथियार बना देश में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को बढ़ाया जा रहा है तथा लोगों के मध्य प्रेम एवं समरसता का खात्मा किया जा रहा है। सोशल मीडिया ने आज हमें अपने आस–पास के परिवेश से अलग होने पर मजबूर कर दिया है। सोशल मीडिया के परिणाम स्वरुप ही आज हमारा राजनीतिक विमर्श गिरता जा रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में फैली गलत एवं भ्रामक सूचना एवं दुष्प्रचार आज हमारे लिए एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। विभिन्न वैब पोर्टल के माध्यम से समाज में जहरीला वातावरण फैलाया जा रहा है जो सांप्रदायिक दंगो एवं मॉब लिचिंग की घटनाओं का प्रमुख कारण बनता जा रहा है।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में (फेसबुक, वाट्सएप, ट्वीटर, यूट्यूब) जहाँ सूचना एवं जानकारियों के प्रचार–प्रसार में तेजी आयी है वहीं अपुष्ट एवं भ्रामक खबरों ने भी

हमारे सम्मुख चुनौती पेश की है। आज भारत में लगभग 80 करोड़ के आस–पास सक्रिय मोबाइल उपभोक्ता है और एक रिपोर्ट के अनुसार 10 में से 9 सक्रिय उपभोक्ता प्रतिदिन इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं और रोजाना लगभग 2 घंटे इंटरनेट पर बिताते है।ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया के द्वारा समाज में सकारात्मकता नहीं लायी जाती है। सोशल मीडिया के द्वारा ऐसे अनेक कार्य किये गये है जिनसे समाज का विकास हुआ है लेकिन आज स्थिति ऐसी होती जा रही है कि सोशल मीडिया पर सही और गलत में भेद कर पाना मुश्किल होता जा रहा है। आज अराजकता सोशल मीडिया की पहचान बनती जा रही है। सोशल मीडिया की स्थिति आज उस पानी की तरह हो गयी है जिसमे हम जैसा रंग डालेगे हमें वैसा ही रंग देखने को मिलेगा। हम सोशल मीडिया के माध्यम से अगर समझदारी पैदा करेगें तो समाज में समझदारी का भाव दिखेगा और अगर विभाजनकारी चीजों को डालेगे तो उसके प्रभाव भी विभाजनकारी ही होगे। सही मायनों में आज सोशल मीडिया अच्छे और बुरे दोनों का ही आईना है। वर्ष 2018 में ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन की तरफ से भारत में सोशल मीडिया की गतिविधियों के ऊपर एक रिपोर्ट जारी की गयी थी। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में न केवल धर्म बल्कि खान–पान से जुड़ी हुयी धार्मिक, सांस्कृतिक प्रथायें सोशल मीडिया में नफरत फैलाने का सबसे स्पष्ट आधार थी। दंगों के वक्त इंटरनेट पर मौजूद अधकचरी जानकारियाँ भी आज बड़ी हिंसात्मक घटनाओं में परिवर्तित होती जा रही है और इसका प्रमुख कारण आज के युवाओं में इंटरनेट का अत्यधिक इस्तेमाल और सत्य एवं असत्य सूचनाओं में भेद ना कर पाना है।

ऐसा नहीं है कि केवल भारत में ही दंगों के वक्त सोशल मीडिया समाज में नकारात्मकता का वातावरण तैयार करता है, सामाजिक एवं आर्थिक रुप से विकसित एवं जागरुक समझे जाने वाले अन्य देशों में भी सोशल मीडिया द्वारा फैलायी गयी भ्रामक एवं अपुष्ट खबरों का असर देखने को मिलता है। वर्ष 2019 में घटित लंदन दंगों के पीछे सोशल मीडिया की अहम भूमिका रही थी। यूनेस्को द्वारा 2017 में एक रिपोर्ट जारी की गयी थी जिसमें वर्ष 2012 से 2016 के मध्य विश्व–भर में सोशल मीडिया एवं इंटरनेट के प्रयोग से युवाओं में बढ़ती हिंसात्मक प्रवृति और अतिवादिता का अध्ययन किया और उस अध्ययन में पाया कि सोशल मीडिया और इंटरनेट के बढ़ते हुये प्रयोग ने तेजी से सामाजिक हिंसा को बढ़ावा दिया है। निश्चित रुप से सोशल मीडिया के परिणाम स्वरुप आज संपूर्ण विश्व एक ग्राम के रुप मे परिवर्तित हो गया है। सामाजिक सक्रियता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है लेकिन कहीं न कहीं सोशल मीडिया के दुरुयोग ने इसकी छवि को धूमिल किया है। आज आवश्यकता है सोशल मीडिया से सबंधित कठोर कानूनों के निमार्ण एवं उनका अनुपालन कराने की ताकि सूचना एवं संचार के इस शक्तिशाली माध्यम का दुरुपयोग कम से कम हो सके।

निष्कर्ष

वर्तमान सदी मीडिया की सदी है। यह कहना किंचित भी गलत नहीं होगा कि हम आज मीडिया द्वारा निर्मित समाज में रह रहे है। मीडिया और समाज के मध्य आज एक गहरा सबंध स्थापित हो चुका है। समाज का प्रतिबिम्ब मीडिया में बनता है और मीडिया का जीव–स्त्रोत समाज है। आज मीडिया समाज को अभिप्रेरित एवं उत्प्रेरित दोनों कर रहा है। समाज का चिंतन, सोच, रहन–सहन इन सभी को मीडिया आज प्रभावित कर रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मीडिया आज सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख नियामक बनकर उभरा है लेकिन आज मीडिया की शुचिता और नैतिकता भी कटघरे में है। जब हम सांप्रदायिक दंगों के वक्त मीडिया की भूमिका का विवेचन करते हैं तो पाते है कि मीडिया उस स्थिति में असहाय नजर आता है। शोध अध्ययन में हमने पाया कि सांप्रदायिक दंगों के वक्त मीडिया के माध्यमों के द्वारा गलत एवं भ्रामक सूचनाओं के परिणाम स्वरुप समाज पर इसका गलत प्रभाव पड़ा। चुंकि वर्तमान में मीडिया इतना शक्तिशाली हो गया है कि मीडिया आज जैसा दिखायेगा वैसा ही समाज में घटित होगा और कहीं न कहीं मीडिया की यही ताकत आज इसकी कमजोरी भी बनती दिखाई दे रही है। सूचना प्रौद्योगिक के इस युग में निश्चित रुप से मीडिया माध्यमों ने एक क्रान्ति का सूत्रपात किया है लेकिन कहीं–कहीं पर यह आज अपने मार्ग से भटकता नजर आता है। आवश्यकता है आज मीडिया को अपनी जिम्मेदारियों को समझने की तथा धर्मान्धता, जातियता, सांप्रदायिकता जैसे तुच्छ एवं समाज को बाँटने वाले मुद्दों से हटकर निष्पक्ष एवं गुणवन्तापूर्ण खबरों को समाज के सम्मुख रखने की।

REFERENCES

इंजीनियर असगर अली (2012) *''धर्म और सांप्रदायिकता'''* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन,

कुमार मुकेश (2014) *''कसौटी पर मीडिया''* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,

कुमार डा0 किशोर (2012) *''भारत में सांप्रदायिकता''* हापुड, अहमद पब्लिकेशन

कुमार अरुण (2003) *''भारत में सांप्रदायिकता का दौर '* नई दिल्ली, 'प्रिया साहित्य सदन,

चमाडिया अनिल (2014) *''मीडिया की सांप्रदायिकता''* नई दिल्ली, मीडिया स्टडीज ग्रुप

जोशी मनोहर श्याम, *'मास मीडिया और समाज'* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

जोशी नवीन,(2015) *मीडिया और मुद्दे,* नई दिल्ली सामयिक प्रकाशन